शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.047

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन

प्राप्तिः 02.05.2026
स्वीकृतः 07.06.2026

47

प्रो0 मंजु यादव
विभाग अध्यक्ष (बी.एड. विभाग)
श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय,
अलीगढ़

संजना यादव
शोधार्थी
श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय,
अलीगढ़
ईमेलः *Yadav.Sanjana3010@gmail.com*

सारांश

इस अध्ययन में स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का उनके लिंग (महिला एवं पुरुष), निवास (शहरी एवम् ग्रामीण), संकाय (कला एवं विज्ञान) के आधार पर अध्ययन किया गया है व एटा जिला के चार स्ववित्तपोषित बी. एड. महाविद्यालयों से 200 प्रशिक्षुओं (100 शहरी +00 ग्रामीण, 100 महिला +100 पुरुष, 100 विज्ञान +100 कला) का चयन किया गया। इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि महिला एवं पुरुष, 100 ग्रामीण व शहरी, तथा विज्ञान व कला संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता में अंतर होता है।

मुख्य शब्द

शिक्षण अभिक्षमता, बी. एड. प्रशिक्षु।

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाश पुंज है, जो अपने ज्ञान और चेतना के माध्यम से संपूर्ण मानव जाति को आलोकित करता है। किसी भी धर्म, संप्रदाय, समाज अथवा राष्ट्र की वास्तविक पहचान उसकी शिक्षा की प्रकृति और गुणवत्ता से निर्धारित होती है। शिक्षा ही वह माध्यम है, जो बालक के संस्कारों और विचारों को परिष्कृत कर उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनाती है।

यदि किसी राष्ट्र के बालक संस्कारित, जागरूक और चेतनशील होते हैं, तो वह राष्ट्र सुदृढ़ एवं प्रगतिशील बनता है। जिस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उसकी आवश्यकताओं, जन–आकांक्षाओं तथा मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित होती है और जिसका प्रभावी क्रियान्वयन योग्य एवं कुशल शिक्षकों के हाथों में होता है, वह राष्ट्र निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर रहता है।

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक मेरुदंड के समान होता है। एक सक्षम शिक्षक न केवल ज्ञान का संप्रेषण करता है, बल्कि वह राष्ट्र के भविष्य का निर्माता भी होता है। अतः शिक्षक

की शैक्षिक योग्यताओं के साथ–साथ उसके व्यक्तिगत गुण, चरित्र और व्यवहार भी अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।

बालक के जीवन में शिक्षक एक आदर्श के रूप में स्थापित होता है, जिसका वह अनुकरण करने का प्रयास करता है। इस दृष्टि से, राष्ट्र के विकास को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों में शिक्षकों के गुण, उनकी क्षमता तथा उनका चरित्र सर्वोपरि स्थान रखते हैं।

शिक्षक ही वह केंद्रबिंदु है, जिसके चारों ओर समस्त शैक्षिक क्रियाएँ संचालित होती हैं। शिक्षण की इस जटिल प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक की शिक्षण अभिक्षमता अत्यंत आवश्यक होती है। शिक्षण अभिक्षमता से तात्पर्य उस विशेष योग्यता से है, जो व्यक्ति को किसी विशिष्ट कार्य को कुशलतापूर्वक करने में सक्षम बनाती है। यह क्षमता व्यक्ति के भविष्य में सफलता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अभिक्षमता सामान्यतः व्यक्ति की जन्मजात प्रवृत्तियों, रुचियों और योग्यताओं से संबंधित होती है, जो उसे किसी विशेष क्षेत्र, पाठ्यक्रम या व्यवसाय में सफलता दिलाने में सहायक होती हैं। अतः आवश्यक है कि बालकों की अभिक्षमताओं की समय पर पहचान कर उन्हें उसी दिशा में उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, जिससे वे अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें।

साहित्य अवलोकन

ए. एन. मिश्रा (2012) ने माध्यमिक स्तर के विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता व छात्रों के प्रदर्शन का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि सरकारी और निजी विद्यालयों के विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सेवादेव पाने (2013) ने प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि महिला व पुरुष प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में अंतर नहीं होता। स्नातक व स्नातकोत्तर योग्यताधारी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में अंतर नहीं होता।

डॉ उत्पल कलिता (2016) ने उच्च माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन लिंग व शैक्षिक स्तर के संदर्भ में किया और निष्कर्ष निकाला कि महिला व पुरुषों के शिक्षण अभिक्षमता के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।

समस्या कथन

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का उनके लिंग (महिला एवं पुरुष) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का उनके निवास (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का उनके संकाय (कला एवं विज्ञान) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.047

परिकल्पना

1. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता में उनके लिंग (महिला एवं पुरुष) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता में उनके निवास (शहरी एवं ग्रामीण) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता में उनके संकाय (कला एवं विज्ञान) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन प्रस्तुत अध्ययन एटा जिला के बी. एड. महाविद्यालयों तक सीमित रहा है तथा टी–टेस्ट का परीक्षण सार्थकता के 0.01 स्तर पर किया गया है।

शोध प्रविधि प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श प्रस्तुत बी. एड. प्रशिक्षुओं का चयन बहुस्तरीय न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। इस हेतु प्रथम स्तर पर एटा जिले के चार बी. एड. महाविद्यालय का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। द्वितीय स्तर पर चारों महाविद्यालय से 200 बी. एड. प्रशिक्षुओं (100 महिला प्रशिक्षु एवम् 100 पुरुष प्रशिक्षु) का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

सारणी

क्रम सं.	बी. एड. महाविद्यालय	संख्या
1.	एस. के. पी.जी. कॉलेज एटा	50
2.	श्रीमती राम श्री महिला महाविद्यालय एटा	50
3.	श्री मलखान सिंह डिग्री कॉलेज एटा	50
4.	कल्याणी गर्ल्स डिग्री कॉलेज मारहरा एटा	50
कुल	04	200

उपकरण

प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है –

डॉ. आर. पी. सिंह एवम् डॉ. एस.एन. शर्मा द्वारा निर्मित शिक्षण अभिक्षमता परिक्षण माला (टीचिंग एप्टीट्यूड टेस्ट बैटरी) का उपयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

संपूर्ण न्यादर्श से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम निम्नलिखित है–

सारणी

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की उनके लिंग के आधार पर सारणी

क्रम सं.	डी. एल. एड. प्रशिक्षु	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
1.	महिला	100	230.41	4.35	3.72
2.	पुरुष	100	229.75	4.21	

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की उनके निवास के आधार पर सारणी

क्रम सं.	डी. एल. एड. प्रशिक्षु	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
1.	शहरी	100	230.41	4.35	2.95
2.	ग्रामीण	100	229.75	4.21	

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सारणी उनके संकाय के आधार पर सारणी

क्रम सं.	डी. एल. एड. प्रशिक्षु	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
1.	विज्ञान	100	230.41	3.97	7.56
2.	कला	100	229.75	4.73	

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 230.41 है तथा पुरुष बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 229.75 है। परीक्षण के मैनुअल में दिए गए मानक के अनुसार 181 से 240 प्राप्तांक तक के बी. एड. प्रशिक्षु अति दक्ष शिक्षक होते हैं अतः यहां महिला एवम् पुरुष दोनों ही बी. एड. प्रशिक्षु अति दक्ष शिक्षण अभिक्षमता वाले हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है कि बी. एड. में प्रवेश केंद्रीय प्रवेश परीक्षा प्रणाली एवं अभ्यर्थियों की पसंद के अनुसार होता है। अतः प्रत्येक बी. एड. महाविद्यालय में महिला एवं पुरुष दोनों ही बी. एड प्रशिक्षु अध्यनरत हैं। वे महाविद्यालय के एक जैसे वातावरण में एक साथ प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। प्रवेश प्रक्रिया के लिए भी सभी एक समान तैयारी करते हैं, इसके साथ ही महाविद्यालय व एन. सी. टी. ई./राज्य सरकार द्वारा गुणवत्ता सुधार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है अतः दोनों की शिक्षण अभिक्षमता उच्च स्तर की प्राप्त हुई है।

सारणी से प्राप्त मानक विचलन मान 3.72 है जो 0.01 स्तर पर सारणी मान 2.72 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृति की जाती है अर्थात महिला एवं पुरुष बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अंतर होता है। मध्यमान के आधार पर दोनों ही उच्च शिक्षण अभिक्षमता वाले होते हुए भी यह कहा जा सकता है कि महिला बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता कुछ अधिक होती है। इसका कारण प्रारंभ से ही उनके अभिभावकों की जागरूकता एवं उनके पास जानकारी के स्रोतों की सहज उपलब्धता हो सकती है।

निवास के आधार पर शहरी बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 230.41 एवं ग्रामीण बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 229.75 है। परीक्षण की मैनुअल के अनुसार शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही अति दक्ष शिक्षकों में आते हैं एवम् उच्च अभिक्षमता वाले हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि शहरी एवं ग्रामीण दोनों को ही समान शिक्षा व सूचना स्रोत उपलब्ध हैं। शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही प्रशिक्षण महाविद्यालय में एक साथ समान शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं।

सारणी से टी–मान 2.95 प्राप्त होता है जो सारणी मन 2.72 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है अर्थात शहरी एवं ग्रामीण बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता में अंतर होता है मध्यमानों के अवलोकन से स्पष्ट है कि यह अंतर कम होता है। इसका कारण यह हो सकता है कि शहरी व्यक्ति प्रारंभ से ही अपेक्षाकृत लगनशील होते हैं और उनमें सदैव आगे बढ़ने की इच्छा ग्रामीण व्यक्तियों की तुलना में अधिक होती है। यह निष्कर्ष उत्पन्न कालिता (2016) के

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.047

निष्कर्ष के विपरीत है।

संकाय के आधार पर विज्ञान संकाय के बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 230.41 एवं कला संकाय के बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 229.75 है। परीक्षण की मैनुअल के अनुसार विज्ञान एवं कला दोनों संकायों के प्रशिक्षु अति दक्ष हैं एवं उच्च शिक्षण अभिक्षमता वाले हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि विज्ञान व कला दोनों ही संकाय प्रशिक्षुओं को सामान महाविद्यालय में समान वातावरण मिलता है समान सूचना स्रोत उपलब्ध होते हैं। वर्तमान समय में प्रत्येक विषय को समान महत्व दिया जाता है

सारणी से टी–मान 7.56 प्राप्त होता है जो 0.01 विश्वास स्तर के सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है अर्थात विज्ञान व कला संकाय के डी. एल. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अंतर होता है चूंकि विज्ञान संकाय के बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान कला संकाय के बी. एड प्रशिक्षुओं से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान संकाय के बी. एड प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता अधिक होती है।

निष्कर्ष

शोध के उपरांत पाया गया किः

1. महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता पुरुष बी. एड. प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक होती है।
2. शहरी बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता ग्रामीण बी. एड. प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक होती है।
3. विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता कला संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक होती है।

संदर्भ

1. मिश्रा, ए. एन. (2012): ''टीचिंग एप्टीट्यूड एंड स्टूडेंट परफॉर्मेंस'' इंटरनेशनल मल्टी डिसिप्लिनर जर्नल, वॉल्यूम 1. इश्यूप्ट. पृ0सं0–**51– 52**।
2. पाने, सेवादेव (2013): ''प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन।'' एन इंटरनेशनल जनरल ऑफ एज्युकेशनल वॉल्यूम 1(1), पृ0सं0–**95–99.**
3. कालिता, उत्पल (2016): ''टीचिंग एप्टीट्यूड ऑफ हाई स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू जेंडर एंड एजुकेशनल लेवल ए स्टडी'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एंप्लॉय रिसर्च 2(2) पृ0सं0–**413–416.**
4. डॉ. आर. पी. सिंह एवम् डॉ. एस.एन. शर्मा (1974)शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण माला (टीचिंग एप्टीट्यूड टेस्ट बैटरी) एन.पी.सी. कचहरी घाट आगरा।